



पुरुष और परमेश्वर

पुरुष और परमेश्वर में महत्ता किसकी—यह विवाद आज का नहीं, आदि युग से चला आ रहा है। एक पक्ष ने कहा—मैं ही सब कुछ हूँ, और ससार मेरा है। दूसरे ने कहा—यदि वह कहीं हो भी, तो वह मैं ही हूँ। और तिसरे ने आत्मार्पण किया—जो कुछ हो, तुम्हीं हो। तुम्हारी शरण हूँ, चाहे जो उपयोग करो।

भक्त ने कहा—भगवान ने अपने रूप में मनुष्य का निर्माण किया। दर्शन ने कहा—मनुष्य ने अपने रूप में भगवान की रचना की। जब मनुष्य ने सपनाना सीखा, ईश्वर का प्रारम्भ तभी से हुआ। ज्यो-ज्यो सपनों में वृद्धि हुई, भगवान की महत्ता में भी वृद्धि होती गई।

सपने धुँधले पड रहे हैं, भगवान भी धुँधला पडता जा रहा है।
सपनों में परिवर्तन,— भगवान में परिवर्तन ।

अतीतकाल के मानव को एक भगवान से सन्तोष नहीं था—
वह अनेक भगवान खोजता रहा।

गेहँ और गुलाब

उसने अनेक भगवान खोजे—उसे अनेक भगवान मिले।
पृथ्वी की नन्ही डूब से लेकर आकाश के इन्द्रधनुष तक में भगवान-
भगवान ही दिखे।

भगवान के पीछे वह इतना पागल हुआ कि अर्द्धचेतन अवस्था
में उसने अपने को भी भगवान ही मान लिया।

उसके भगवान बने उसके वे विश्वाम, जिनके बिना वह जी नहीं
सकता था।

उसके भगवान बने उसके वे भय, जिनमें बढ़कर स्थूल सत्य उसे
और कुछ नहीं मालूम होता था।

भगवान को आदमी ने बनाया, यह कहना उतना ही गलत है,
जितना यह सुनना कि भगवान ने आदमी को बनाया।

आदमी हमेशा भगवान की खोज में रहा है, और हमेशा उसकी
खोज में रहेगा।

भगवान एक सपना है।

भगवान एक आर्काशा है, जिससे मानव जीवन ओतप्रोत बना
है।

जीवन एक सपना है, जिससे हम-तुम ओतप्रोत हैं।

अपने सपने का ही नाम हमने आत्मा दे रखा है।

इसीलिए आत्मा हमेशा भगवान का सपना देखती रहती है।

जैसा आत्मा का सपना, उसी रूप का उसका भगवान।

× × ×

ध्यानावस्थित होकर, एकान्त में, मानव खड़ा था अपने ससार
को भूला हुआ। अपना ससार—वह आप भी उसे समझ नहीं सकता
था। विस्मय में, भय में वह चिल्ला उठा—

“भगवन् ! मेरी सहायता करो। तुम्हारे बिना मेरा सहायक
कीन है ? मुझे ज्ञान दो—क्योंकि तुम्हीं ज्ञान के आगार हो । प्रकाश दो
दो—क्योंकि तुम्हीं तो प्रकाश-मृज हो ।

मानव चिल्लाता रहा, भगवान चुप रहा।

मानव ने खेतों प्रारम्भ कीं। बड़े जनन में, श्रम में उसने खेत

बेनीपुरी-प्रथावली

जोते, किन्तु वर्षा हो नहीं रही थी, वह चिल्ला उठा—

“भगवान्, मेरी सहायता करो। अपने बादलो को मेरे खेत में बरसने की आज्ञा दो।”

उत्तर में सूखी झन्ना बहती रही।

मानव ने युद्ध-भूमि के चक्र-व्यूह में अपने को प्रतिद्वन्द्वी मानव के सामने पाया। भय से वह चिल्ला उठा—

“भगवान, भगवान, मेरी सहायता करो। इस नर-पिशाच के सम्मुख मेरी रक्षा करो, मुझे विजयी बनाओ। रघुवर, तुमको मेरी लाज।”

युद्ध-भूमि में रुड-मुड विखरे थे—वीरो की लोथ पर चील-कौवे भोज मना रहे थे।

आत्मा के स्वप्न देखनेवालो को परमात्मा इन्ही रूपो में प्राप्त होते रहे हैं।

यदि कभी वर्षा हो गई, विजय मिली— तो फिर स्वप्न को सत्य क्यो नहीं मान लिया जाय ? “भगवान्, तुम महान हो।” “भगवान् मेरे रक्षक हैं, फिर डर किसके ?” “राखनहार भये भुज चार तो का होई हैं दो मुजा के विगारे ?”

प्रार्थना ! यज्ञ !—यज्ञ ! प्रार्थना !

भगवान में मानव इतना भूला कि वह मानव को ही भूल गया। पुराने पैगम्बर ने चिल्लाकर कहा—

“खुदा ने कहा—उस आदमी पर अभिशाप, जो आदमी पर विश्वास करता है और जिसका हृदय भगवान से अलग रहता है।”

आदमी पर अविश्वास, भगवान में विश्वास। किन्तु, जब आदमी पर विश्वास नहीं, तो भगवान पर कैसे विश्वास हो ? क्योकि भगवान और आदमी आखिर एक ही सिक्के के दो रूप हैं न ।

मानव-कल्पना का ही रहस्यवादी प्रतीक है भगवान की कल्पना।

विशुद्ध भगवान का अर्थ है, विशुद्ध मानव।

स्वप्न-भगवान का अर्थ है, स्वप्न-मानव।

गेहूँ और गुलाब

सर्व सत्ताधारी भगवान वह निरकुश राजा है, जो प्रजा का उत्पीडन या शोषण करता है।

सर्वज्ञ भगवान वह पुरोहित है, जो जनता के अज्ञान पर अपना व्यापार चलाता है।

राजनीति में भगवान का काम पडयन्त्र करना है, सम्पत्ति में भगवान का काम अधिकाधिक को दरिद्र बनाना है।

मानव ने भगवान को अपने से महान कभी नहीं बनाया।

× × ×

मानव ने महान और सुन्दर भगवान बनाये हैं— इससे मानव की महान और सुन्दर शक्तियों का पता चलता है।

जब मानव अर्धी, अन्धकार या प्रकाश की अभ्यर्थना या उपासना करता था, वह अपने प्रति ज्यादा ईमानदार था, वह अधिक सरल था, उसके ज्ञान पर पर्त नहीं पड़ी थी।

जब उसने इन में देवत्व या ईश्वरत्व की कल्पना की, वह भूल-भुलैया में फँसा।

जब तक मानव-मस्तिष्क कल्पना के फेर में है, हर पदार्थ उसके सामने काल्पनिक रूप पकडकर आया करता है। मानव-चक्षु से पर्दा हटने दीजिये, वह सब कुछ स्पष्ट देखने लगेगा। मानव-मन जब स्वाभाविकता को स्वभावतः ग्रहण करने में सक्षम हो जायगा, सभी काल्पनिक देव आप-मे-आप काफूर हो जायेंगे।

मानव-विचार में असीम बल है। आदमी जैसा सोचता है, समार को उसी के अनुरूप ढलना होता है। वह समार को अपने निकट बुलाता है, उन पर अपना मग्न पड़ता है, नसार उसके नामने कर-वद्ध प्रार्थी होता है। अपने विचार-बल में मानव नमार की सृष्टि करता है।

जब तक मानव स्वयं मानव के सहार में लीन है, वह ऐसे भगवान की सृष्टि करेगा ही, जो नमार का सहायकर्ता है। कर्ता और भर्ता के रूप में भी वह भगवान बनाता है, कर्ता, वह जो नख्वे अनागे और दस भाग्यवान की सृष्टि करे, भर्ता, जो गरीबों का पालन करे, जिनमें वे धनियों के पर दवावें।

समाज के विचार ही भगवान के विचार हैं। समाज की आत्मा ही भगवान की आत्मा है— जनता का दृष्टिकोण ही भगवान का दृष्टिकोण हुआ करता है।

बेनीपुरी-प्रयावली

भगवात-निर्माता के रूप में मानव ने अपनी अपरम्पार प्राकृतिक शक्ति का परिचय दिया है ।

अब वह मानव-निर्माता के रूप में अपने कीशल का परिचय दे ।

अब मानव, मानव की उपासना करे, मानव की वन्दना करे । भगवान की स्तुतियाँ बहुत हुई, हमारी कविता और गीत अब मानव की अलिखित यशोगाथा को छन्दोबद्ध करें । मानव की ही खोज में मानव की साधना दौड़े— उछवसित, चचल, क्रियाशील मानव मस्तिष्क अपने ही लिए अपने को पुष्पित और फलित करे ।

शोधक, अन्वेषक, कवि और दार्शनिक मानव ने राह चलते कितने देव और ईश्वर बनाये । अब वह अपने लक्ष्य के निकट आ पहुँचा है, वह मानव का निर्माण करे ।

मानव, जिसकी शक्तियों के समक्ष छप्पन कोटि देव और देवादि-देव भगवान भी नत मस्तक हो ।

× × ×

हम फिर सपने देखें । सपना देखना कोई लज्जा की बात नहीं । आज की दुनिया में बहुत से सपने देखने को हैं— नये सुनहले सपने ।

हमें एक नवीन सौन्दर्य का सपना देखना है— नये दिन और उसके नूतन कर्तव्यों के, उसके नये प्रयत्नों और नये साहसों के सौन्दर्य का सपना देखना है ।

हमें लज्जित नहीं होना है । लज्जित नहीं होना ही, नये मानव के लिए, एक नई कला है । लज्जित नहीं होना ही, उस नये सगीत का शिलान्यास देना है, जो मानव-हृदय के स्वामाविक उच्छ्वासों का प्रतीक होगा ।

मानव की शक्ति के तीन सपने हैं—

काम करने का सपना,

रात का सपना,

छलना का सपना,

इन सपनों में एक ही अमर सपना है— काम करने का सपना । सृज-

गेहूँ और गुलाब

नात्मक शक्ति का यही सच्चा सपना है। इस सपने का ही नाम जीवन है।

चाहिए ऐसा सरल स्वभाव मानव,
जिसमें सरल साहस हो;
मानव, जिसमें सरल धुन हो,
मानव, जिसमें मानवोचित अनुभूति हो,
मानव, जो सीधा देखे,
मानव, जो सीधा सोचे;
सरल मानव, जो सीधा काम करे।

चाहिए जीवित मानव— जो हमें मृत्यु से बचावे। परमात्मा की ओर हमने बहुत देखा, अब अपने पुरुषार्थ की ओर देखें।

